

स्काई कैनवस: कृत्रिम उल्का बौछार

हाल ही में मल्लि जानकारी के अनुसार, जापानी कंपनी ALE वर्ष 2025 में [उपग्रहों](#) को लॉन्च करने की योजना बना रही है, जो [स्काई कैनवस](#) नामक कृत्रिम [उल्का बौछार](#) (Artificial Meteor Shower) को प्रेरित करेगा।

स्काई कैनवस प्रोजेक्ट:

- स्काई कैनवस प्रोजेक्ट का उद्देश्य विश्व के लोगों को "विश्व का पहला मानव निर्मित उल्का बौछार को लाइव देखने का अवसर प्रदान करना" है।
- ALE गैस टैंकों की एक दबाव-संचालित प्रणाली का उपयोग करने की योजना बना रही है जिसमें कृत्रिम उल्का बौछार को प्रेरित करने के लिये 8 किलोमीटर प्रतिसेकंड की गति से कणों पर प्रहार किया जाएगा।
 - इसके लिये एक लघु आकार का अंतरिक्ष यान धातुत्वक "शूटिंग स्टार" कणों को [पृथ्वी की नमिन कक्षा](#) में ले जाएगा।
- कक्षा में स्थिर हो जाने के बाद इन कणों को छोड़ा जाएगा और वे 60 से 80 किलोमीटर की ऊँचाई पर वायुमंडल में प्रवेश करने से पहले ग्रह के चारों ओर परकिस्मा करेंगे।
 - यह कंपनी [जलवायु परिवर्तन](#) की स्थिति को बेहतर ढंग से समझने में वैज्ञानिकों की मदद करने के लिये मीसोस्फीयर (वायुमंडल की तीसरी परत) से वायुमंडलीय डेटा एकत्र करने की भी योजना बना रही है।
 - उपग्रहों की नगिरानी के मामले में मीसोस्फीयर की अवस्थिति बहुत नीचे है, जबकि वेदर बलून अथवा वमिनों के लिये काफी ऊँची

प्राकृतिक उल्का वृष्टि:

- एक प्राकृतिक उल्का वृष्टि होती है जब पृथ्वी किसी [धूमकेतु](#) या [कबुदरग्रह](#) द्वारा पीछे छोड़े गए मलबे की धारा से गुज़रती है।
 - जैसे-जैसे पृथ्वी सूर्य के चारों ओर अपनी कक्षा में यात्रा करती है, यह मलबे की इन धाराओं का सामना करती है, जहाँ धूल और चट्टान के छोटे कणों से बनी होती हैं।
- जैसे-जैसे पृथ्वी इस मलबे से होकर गुज़रती है, कण उच्च गति, आमतौर पर लगभग 40 किलोमीटर प्रतिसेकंड की गति से पृथ्वी के वायुमंडल में प्रवेश करते हैं।
 - कणों और वायुमंडल के बीच घर्षण उन्हें गर्म करने और वाष्पीकृत करने का कारण बनता है, जिससे प्रकाश की धाराओं का निर्माण होता है जिन्हें हम [उल्का](#) या "शूटिंग स्टार" के रूप में जानते हैं।
- उल्का वृष्टि नाम आमतौर पर उस तारामंडल से लिया जाता है जहाँ से उल्काएँ विकिरण होती दिखाई देती हैं।
 - उदाहरण के लिये [प्रसिद्ध उल्का वृष्टि तारामंडल प्रसिद्धि](#) से उत्पन्न होती है।
 - पृथ्वी पर पर्यवेक्षकों को दिखाई देने वाली उल्का वृष्टि की लगभग 30 घटनाएँ प्रत्येक वर्ष होती हैं और उनमें से कुछ सदियों से देखी गई हैं।

[स्रोत: इंडियन एक्सप्रेस](#)